आपातकाल में सृजन फुलवारी

प्रीति हर्ष

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

प्रीति हर्ष

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-151-0
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020**, प्रीति हर्ष**
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY PREETI HARSH

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।
आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।
आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	एक दीप देश के नाम	6
2.	किसान	7
3.	मुझे तलाशती मेरी जिंदगी	8
4.	रास्ता/मंजिल	9
5.	प्रेम	10
6.	मेरी कविताएं	11
7.	शहीद	12
8.	खेल निराले हैं तकदीर के	13
9.	उद्भव	14
10.	मेरे हाथ की रेखाएं	15
11.	चैतन्य जीवन	16
12.	स्त्री नदी सी	17
13.	आखिर कौन हूं मैं	18
14.	यूँ बनी कविता	19
15.	आदमी की फितरत	20
16.	मेरा संसार	21

एक दीप देश के नाम

आओ मिलकर दीप जलाएं
उम्मीदों और सम्मान का
अकलुश अंतर्मन से
उन सब के लिए
जो साथ देश के
बिना ढाल जो खड़े हुए
समर की इस बेला में
जाति,धर्म को भूलकर
साथ देश के बने रहे
उस दिन कि तुम बाट ना देखो
मृत्यु बाण जो बींध रहा
शायद तेरे अपने भी हों
क्रंदन और चित्कार ही हो
दूषित अपने कर्मकरण से
मोहपाश से दूर हटो
आकाश तिमिर शायद छंट जाए
आओ मिलकर दीप जलाएं
विजय पताका फहराने को
अपने संश्रय की देहरी पर

किसान

मैं किसान...! खेतों का राजा..!!!
पहला प्रेम मेरा धरती से,
हो जैसे धरा और बीया का,
जलाशय की एक धारा का दूजी से,
हवा चली, नदियां बही, ऋतुएं बदलीं, बीज जमा,
पर ना बदली परिस्थितियां,
बीया से पौधा, पौधे से अनाज,
पर भूखा रहा मेरा परिवार,
पपड़ाए ओंठ, पाठ से चिपका पेट,
कीट, पतंग, सरीसृप पले,
ना पल सका मेरा परिवार,
जन्म से मरण का भौतिक अनुष्ठान,
या हो कोई रीत-रिवाज,
मानव अस्तित्व इन अन्न कणों में
तो क्यों ना मिलता पूरा दाम...?
कभी अतिवृष्टि जठराग्नि को मद्धम करती,
कभी तो गिरता मोती गार, जल जाता मेरा संसार,
कोई न समझे जेठ की गर्मी,
खरीद खाएं छप्पन भोग,
अनंत काल से अनंत काल तक,
गनित का ये बड़ा सवाल, जो उपजाए वही दुख पाए!
यह कैसी माया है.. कोई इसका भरम बताए.....?
क्यों किसान पर तरस ना आए..?

मुझे तलाशती मेरी जिंदगी

यूं तो सूरज की किरणें
रोज ही भोर मेरे दरवाजे पर दस्तक देतीं

मैं अबोध
हर दिन उससे मिलती
नई आशाओं की उम्मीद, मस्त थी जीवन में
जी रही थी गिर्द, थे जो मेरे अपने
कहीं कुछ रीता भी नहीं, कोई शून्य भी नहीं
बीनाई में सब ठीक, मैं जी रही थी औरों में
खुद को पाकर, प्रगल्भी सी कभी
स्खलन से भरी राहों की ओर
सोच से अनजान, अंजाम से अनजान

सहसा
मुझे तलाशती मेरी जिंदगी
मेरी आंखों में आंखें मिलाती
हंसकर पूछ बैठी,कभी खुद को भी देखा?
सवांर ले इन बिखरे रजत केशों को
आंखों के कोरों की इन झुर्रियों को
रुखी इन गदेलियों को

नहीं खुश हूं मैं
वस्तुतः
ये केश मेरे अनुभव
ये झुर्रियां मेरा जीवन पथ
ये गदेलियां मेरी कर्मठता
कुछ भी नहीं बदलना चाहती
तृप्त हूं मैं, तुष्ट हूं मैं, मुझ में जीवन है
मुझे तलाशती मेरी जिंदगी
मुस्कुरा उठी मुझे गले लगा कर।

रास्ता/मंजिल

मैं तुम पर विश्वास कर चलती रही कदम दर कदम
अपनी सारी जिंदगी तुम संग ही चाहा
तुमसे इतर मेरा कोई अरमान नहीं
बस चलती रही
तुममें खुद को जिया
जो तुम कहते आज इस मोड़ पर
यूँ ही तुमने रास्ता बदल लिया
क्यों मेरे सपनों को बिखरने दिया
तुम पर विश्वास किया
इसलिए साथ छोड़ दिया
कहीं मैं मंजिल ना पा जाऊँ
तुम हाथ छोड़ दो मैं अपना रास्ता
अब अकेले ही तय करूंगी
जिस पर चल पड़ी हूँ
मंजिल तक पहुँच कर जिद है उसे पाना
जो सिर्फ मेरा
इतने बरसों से इंतजार कर रहा
मेरी मंजिल, मेरा रास्ता कठिन है पर
जिस चीज के लिए मैं बनी हूँ
ऊंचाइयों को छू लूंगी।

प्रेम

चाय की प्याली और हमारा प्रेम,
सच बड़ा अजीब है,
लेकिन हमें बांधे रखता है, एक दूजे से,
जैसे नजरों से बांध लेते, हम गगन के विस्तार को,
तुम्हारा यूं मेरी, उंगलियों को थाम लेना,
जोड़ देता है मुझे तुमसे
सुकून देता, संबल बढ़ाता, यह सिलसिला तुम्हारा मेरा,
कभी ना टूटे, चाय की ताजगी, और हाथों की गरमाहट,
इन्हीं क्षणों में, तुम अपनी भावनाओं का,
निवेश करते मुझमें, और मैं बंध जाती,
जैसे तटबंध बांध लेता, नदी की धार को,
मेरा टूटना, मेरा जुड़ना,
मेरी चुनौतियां, मेरी खुशी,
अनकहे वे शब्द, तुम्हीं ने पहचाना,
इसे महसूस किया मैंने, हर बार जिया मैंने,
अपने दिन में, अपनी रातों में, स्वप्न में, साकार में,
सच बड़ा अजीब है,
शायद पहले से तय था, हमारा यह प्रेम,
जो सिमट नहीं सकता,एक गीत में,
एक मुस्कुराहट में, स्पर्श मात्र में,
प्रेम करना, समर्पण से, बांध लेता है,
उसे पल्लवित करना, पुष्पित करना, हम पर है,
जैसे एक बीज बांध लेता,
पूरे जीवन के आयाम को।।

मेरी कविताएं

कविताएं,
कुछ सुनी थीं, पढ़ी थीं,
सृजन बोध से कोसों दूर,
ना धीर, ना गंभीर,
पर थाम लिया था उसने तभी,
जब बच्चे हंसते, मां गुनगुनाती,
चिड़ियां चहकतीं,
बारिश की बूंदें,
टिन की छत पर सरगम गातीं,
धरा से हाथ मिलातीं,
और खिल उठते फूल,
नन्ही चींटी दाना ले चढ़ पड़ती पहाड़,
बच्चे की पहली किलकारी,
नई दुल्हन के पैरों में बजती पायल,
जाने कब उंगलियों की संकली बनाकर,
सहचरी बन चल पड़ी थी
मेरे साथ अदृश्य सी,
पर सांस लेती, मुझ में ही,
स्पर्श करने लगी,
मुझ पर हक जताने लगी
गाहे-बगाहे पूछी ही लेती.... कैसी है तू.....?
काव्य तिलिस्म कहूं उसे
मैं और मेरी कविताएं,
शब्दों को स्पर्श कर उतर आतीं, कोरे कागज़ों पर,
भावनाओं से सराबोर, नव सृजन करतीं।।

शहीद

आहुति दे प्राण की, वे तिरंगा फहरा गए,
जाने कैसे लोग, उन्हें यूं ही भुला गए,
क्या उम्र उनकी रही होगी?
और जज़्बा वतन पर मिटने का था,
था यही वक्त तब भी, यही खूनी शाम थी,
रंग गया लहू से अपने, मंगल पाण्डे नाम था,
इरादे मजबूत उनके, उग्रता थी श्वास में,
सरफरोशी के गान पर आत्मोसर्ग कर गए,
शहीद की मां हो या बेवा हो उनके नाम की,
ना उन्हें स्वीकार था वे रोएं उनके बाद भी,
मुस्कुरा कर चढ़ गए वे, तख्त-ए- फांसी झूलकर,
कह गए मां तुम ना आना रो पड़ोगी सामने,
अशफाक, बिस्मिल और लाखों दे गए कुर्बानियां,
जाएंगे खाली हाथ पर इक कसक सीने में थी,
जाने कब अपना चमन ये आज़ाद वतन कहलायेगा,
है मातृभूमि का कर्ज़ हम पर, हंसकर लुटा दें जान भी,
पर कभी झुकने न पाए हिंद तेरी शान भी,
आखिरी पैगाम यह हिंदुस्तान है तेरे नाम की।

खेल निराले हैं तकदीर के

खेल निराले हैं तकदीर के,
जीना सीखो इसे तदबीर से,

बड़े सूरमा, ज्ञानी हो गए,
पर धरती पर टिक ना पाए,
सतयुग, त्रेता, द्वापर बीता,
सत्ता और सभ्यता बदली,

जीवन क्या है समझ ना पाए,
निन्यानबे का फेर सबको उलझाए,
बांटकर खाए सुख नींद पाए,
लूट खाए और चैन गंवाए,

चौरासी लक्ष का चक्कर,
और धर्म की दुहाई,
पर मानव को समझ ना आए,
कर्म करें ऐसे वह जग में,

अजर अमर होकर आया है,
क्यों वो देख नहीं पाता है?
धरती पटी पड़ी लोगों से,
जो कभी न जाने को आए थे,

समय सबको नचाएगा,
आदमी प्यादा रह जाएगा,
दो गज ज़मीन या धवल कफ़न,
यह भी साथ ना जाएगा।।

उद्‌भव

पिताजी की पीठ,
जिस पर चढ़ता बचपन में,
मानों आसमान पर चढ़ गया हूं,
सब दिखता छोटा
ये ऊंचाई, पिताजी के पीठ की,
या उनके स्नेह की, सुरक्षा की,
मां एक उर्वर भूमि,
जिसे जोता जाता समय-समय पर,
और उपजते, हम भाई-बहन,
तब किंचित भी, अहसास न था,
आज भी, उन दिनों की यादें,
मुस्कान लातीं चेहरे पर,
मां की फैली बाहों का वो विस्तार,
जिस में समा जाते थे,
हम सभी भाई-बहन लिपट जाते, महसूस करते,
उनकी छाती में धड़कते उस हृत्पिंड को,
जो सुनाती जीवन गीत,
पर तब कभी सोचा नहीं,
पिताजी और मां सबकी तरह हाड़-मांस के,
उनकी देह लगती धातुई,
जिससे जन्मे हम सभी भाई-बहन, उनके देहांश,
बिना उनके अपूर्णांक, उसका मर्म,
समझ पाया मैं, बरसों बाद।।

मेरे हाथ की रेखाएं

मेरे हाथ की रेखाएं जन्म से ही थीं
कुछ आड़ी तिरछी सी, कुछ गाढ़ी हल्की सी...
कुछ पहाड़ों पर चढ़ते रास्तों सी...
कुछ घाटियों में उतरती पगडंडियों सी...
सभी कुछ ना कुछ बताते इनका मतलब...
कुछ लंबे अनुभव से... कोई किताबों से पढ़ कर...
मेरे साथ-साथ यह रेखाएं भी बढ़ती रहीं..
एक संजाल सी हाथों पर, अर्थ का तो पता नहीं,
पर बहुत से परिवर्तन उनमें मैंने होते देखा..
लेकिन मेरे कर्म की प्रधानता बराबर रही..
लोगों से सुना था कि.. हाथों की इनी-गिनी लकीरें
इन्हीं से बनती है तकदीरें..
पर चमकी उनकी भी तकदीरें... जिनके हाथ नहीं थे
भले-बुरे की पहचान होती विवेक से..
सही निर्णय ले हम आगे बढ़ते निरंतर..
इन रेखाओं के भरोसे, हम बैठ नहीं सकते
कर्म की सार्थकता रहेगी तभी जीवन सफल होता
बहुत भरोसा नहीं मुझे. हाथ की रेखाओं पर..
हजारों को जमीं से आसमां तक चढ़ते देखा
सिर्फ अनम्य परिश्रम और लगन के बल पर
हाथ की लकीरों को झूठलाते से..
जो एक मिसाल बने सबके लिए
मैंने यही सीखा प्रारब्ध से नहीं...
हाथ की रेखाओं से नहीं, कर्मों से ही बदलते हैं भाग्य...!

चैतन्य जीवन

क्षणभंगुर इस जीवन में... संगरोध भी है जरूरी तय,
तभी अवचेतन के उद्देश्य को परख पाते हम,
स्वप्रयोजन पहचान पाते..
जीवन की सार्थकता... समझ पाते,
ऋषि, मुनि, ज्ञानी भी.. एकांतवास में जाने पर..
स्वयं को तपाग्नि में परिशुद्द करते
और... निमाई... चैतन्य महाप्रभु बन जाते,
सिद्धार्थ ...बोधिसत्व कहलाते,
या कोई काल पुरुष... गुरु आदि शंकराचार्य बन जाते,
एकांत में अपने कृतित्व का सतत चिंतन, मनन करते,
चेतना से निरतिशय के, सत्य को चिन्हित करें,
बढ़ चले प्रबोधन की दिशा में,
आख्यान दें... आत्मबोध का,
मिटा दें खौफ..... जन्म मरण के चक्र का,
अलगाव करें..... इंद्रियों का मेधा से
मनुज में ना रहे..... कोई सामाजिक दूरी,
ऊंच-नीच का भेदभाव, या कोई कर्णभेदी कोलाहल,
चौमासा और कल्पवास, पर्यूषणपर्व और तालाबंदी,
सब एक दूसरे के ही रूप हैं, किसी नव प्रयोजन के लिए,
नवचेतना का संचार करते, आज भी हम देख सकते
इस सनातन परंपरा को ऐसे ही ज्ञान और सन्यास भाव से
कोई हिमालय की तपस्या के पश्चात सबको अपना मान कर
एक छोटा सा साधारण बालक... प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सा बन जाता,
या कोई अजय बिष्ट....बन जाता योगी आदित्यनाथ,
जो अपने त्याग और ज्ञान से... करोड़ों जन के ह्रदय में बसें...
सौ बार धन्य है ऐसी मांए... जो ऐसे तेजस्वी पूत जनें।।

स्त्री नदी सी

स्त्री नदी सी होती है,
चंचल, पुलकित, निर्मल, पावन
लुभाती,रिझाती,रंगरहित,
लताओं सी मचलती नदी बढ़ती जाती,
उलझी राहों में बलखाती, फिर भी वह बढ़ती जाती,
अपनी राह स्वयं बनाती, लहरों से बजता जलतरंग,
पायल की झनक, चूड़ी की खनक,
लहरों में गीतों की मौज मौज,
कछार पर फूलों की फौज- फौज,
हरित तृणों सी उग आई,
हर रूप रंग में ढल जाती, पानी सी तरल,
हिमखंड सी कठोर, ओस सी नन्ही, प्रलय सी प्रचंड,
उमड़ती कोसी का हाहाकार,
कभी झील सी व्यथित, कभी महासिंधु का शांत मौन,
प्रेम,अपनत्व,कर्तव्य से बंधी हुई,
पेड़ों से लिपटी अमरबेल सी,
कभी बादलों को भेद, बरखा के रजत बूंदों सी, धरा पर जीवनदायिनी,
वक्त पड़े पर्वत को डिगाने वाली,
स्त्री तुम नदी हो, अजर, अमर,अनंत, अजेय।।

आखिर कौन हूं मैं

व्योम से उतरी नहीं,
पिता की गोद से,
वामांगी होने तक,
हर रिश्ते की पूर्णता मैं,
परिबद्‌ध भी मैं,
पर क्यों हमेशा, कम आंकी जाती,
आखिर कौन हूं मैं---?
जो सबको ले चलती रहती,
हर किरदार मेरा, समर्पण का रूप,
पर सोचने को, मैं ही विवश,
आखिर कौन हूं मैं---?
यह सवाल, कुछ अंतराल,
आँखें मिलाता पूछता,
मैंने कहा, मेरा वजूद,
मैं स्त्री,
मैं तटस्थ, मैं निष्पक्ष,
मैं धनात्मक, मैं ऋणात्मक,
मैं परमाणु, मैं अविभाज्य।।

यूँ बनी कविता

बरगद के नीचे,
बरसों से पड़ी,
ऊसर ज़मीन पर,
तिरछी आती धूप के,
चौकोर कोनों पर उग आई,
पाशबिक सी कुछ लता-बूँदें,
शूद्र नील-हरित,
उत्तमांश से लदी,
देख उसे में आस से,
स्फुलिंग नैन,
बढ़ते कदम और यूँ बनी कविता।
उसके हरित पर्ण पर,
नन्हा पतंगा,
रक्तिम आभा लिए,
स्याह से टिपके बने,
जब चली स्पर्श को,
भनभनाहट से उड़ा,
नन्हे पंख से और यूँ बनी कविता।

आदमी की फितरत

तू तदबीर अपनी पकड़ चला चल।
किसी के लिये अब ठहर ना जाना।
अपने ही गोशों में उलझे हुए लोग।
उन्हें बातों को नहीं समझाना।
आदमी के अंदर भी कई चेहरों का आदमी है।
किसी को यह नहीं बतलाना।
कोई पूछे तो फकत इतना ही कह।
शायद मुझमें ही कोई नुक्स होगा।
जिसकी सजा को जी रहे हैं।
इसे जिंदगी कहें या मौत।
चाहे तुम जो समझ लो।
अब इस बात से फ़र्क नहीं पड़ता।
बेपरवाही का मिज़ाज़ यूं हम पर छाया
फ़र्क अब कोई नहीं अपना हो या पराया।

मेरा संसार

छोटी सी मेरी प्रीत की दुनिया,
पिया मेरे तुम्हारे साथ,
तुम्हारे प्रेम की पक्की दीवारें,
उस पर माटी सी सादी,सरल मैं,
तिस पर उंगलियों की छाप हमारी,
दोनों के प्रीत की नमी का कच्चापन,
उस पर गुड़ पका तुम्हारा मेरा मन,
कुएं से भर लाई ठिलिया,
पीतरे की गगरी भी,
निपटा के घरवा का काज,
फुरसत के छन बैठी पिया,
गुनगुनाती जाऊं मैं,
फूल के कसीदे काढ़ लूं,
और बेल उर्दू के आयतों सी,
ऐसी गढ़ू मैं जीवन चदरिया,
मोरे धागे का टूटे ना तार,
जो तुम हो साथ पिया,
यही जीवन का सोलह श्रृंगार।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

प्रीति हर्ष

नारीपुर (उत्तर प्रदेश)

Email- dpreeti629@gmail.com

Mobile - 845936721

वर्ष २०२० एक वैश्विक संकट का ऐसा वर्ष जिसने पूरी दुनिया को आत्मचिंतन करने और सचेत होने का तीक्ष्ण संकेत दिया है। जहां प्रकृति स्वयं श्वासरोध से ग्रसित है। मानव के निर्विवेकपूर्ण कृतियों से घुटन महसूस कर रही है। संकट का इतना विकराल रूप है कि मानव अस्तित्व भी आज खतरे में है। लगभग प्रलय और युद्ध जैसी स्थितियों के समान समसामयिक स्थितियां बन गई है, जहां मानव का सीधे प्रकृति से संघर्ष उत्पन्न हो गया है। इस समय हमारा देश भारत दूरदृष्टिता दिखाते हुए मानव रक्षा और मानव हित हेतु हर कदम लगभग १३० करोड़ जनता की भलाई को देखते हुए उठा रहा है और यथासंभव दुनिया के अन्य देशों में भी मानव अस्तित्व को बचाने के लिए निरंतर प्रयत्नरत है। देश लगभग ४० दिनों तक तालाबंदी की स्थिति में है, ऐसे में एक कलमकार होने के कारण कुछ सकारात्मक करने की दिशा में लिखी गई मेरी कविताएं मेरी साथी बनीं और हाथ बढ़ाया अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन ने जिससे यह पाठकों तक पहुंचने में सफल होगी। अंतरा शब्दशक्ति जिन्होंने सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए घर में रहें, सुरक्षित रहें... का पूर्ण पालन किया। धन्यवाद डॉ. प्रीति सुराना जी।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क - 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-151-0

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/